

आकृतीः AV. 3, 20, 9. प्र राज्यमन्त्रार्थमाप्नोति TS. 2, 6, 6, 5. ÇAT. Br. 2, 4, 4, 6. 3, 2, 4, 39. प्रज्ञाम् M. 3, 277. कामान् 2, 95. फलम् 3, 176. अमुं लोकम् 10, 128. परमो गतिम् 4, 14. 6, 96. 8, 420. 12, 116. 126. यशः, सुखम् 8, 343. 12, 19. राज्यम्, धनैश्चयम्, ब्राह्मण्यम् 7, 42. प्रशंसाम् 10, 127. निन्यताम् 5, 164. 9, 30. मारुणम् 5, 38. वधं 8, 364. 9, 291. पुरुषानृतम् 71. दोषम् 8, 355. एनः 11, 261. दण्डम् 8, 225. 319. 354. 9, 287. जिह्वाप्याशुर्म् 8, 270. — N. 1, 10, 10, 12. 11, 17. 28. 24, 47. R. 1, 1, 85. 3, 35, 6. VIÇV. 5, 19. 14, 19. 13, 19. RAGH. 12, 37, 65. KATHÁS. 5, 27. 13, 64. VID. 42. 59. 93. PRAB. 84, 15. U. S. W. — zum Gatten oder zur Gattin bekommen: देवान्प्राप्य N. 4, 8. प्राप्नुमिच्छति देवास्त्वाम् 3, 6. — med. BHAG. 16, 13. MBH. 1, 1734. 3, 1046. 1352. 8254. 13536. R. 1, 39, 7. 2, 21, 28. 4, 34, 28. — pass.: प्राप्यते अमृतं ततः M. 12, 85. स्वर्गो रत्नपात्राप्यते यथा R. 1, 17, 6. — 3) gramm. in eine Form, einen Laut (acc.) übergehen: नासिकाशब्दश्च नसं प्राप्नोति und das Wort नासिका geht in नस über Siddh. K. zu P. 5, 4, 118. सकार्तवर्गो शकारेण चवर्गेण वा योगे शकारचवर्गौ क्रमात्प्राप्तुतः VOP. 2, 25. — 4) intrans. reichen bis (आ): आप्रपदं प्राप्नोति P. 5, 2, 8. AK. 2, 6, 3, 21. — 5) sich finden, vorhanden sein: यत्र प्राप्नोष्यौषधे AV. 4, 19, 2. in der Gramm. in Folge einer Regel Geltung erhalten, sich aus einer Regel ergeben: स्यान्प्राप्नोष्यं कार्यमादेशे न प्राप्नोति KĀÇ. zu P. 1, 1, 56. इको ये गुणवृद्धौ प्राप्नुतस्ते न भवतः 4, Sch. In derselben Bed. auch pass.: प्राप्यनापानां यः सदृशतमः 50, Sch. — partic. प्राप्त 1) erreicht, getroffen, angetroffen: धूमप्राप्तः KĀTJ. Ça. 22, 6, 16. 17. यथैधस्तेजसा वाङ्मः प्राप्तं निर्दकृति क्षणात् M. 11, 246. पत्तिभिः — तरुकोटरे शवकास्थीनि प्राप्तानि Hit. 20, 15. केनापि व्याधेन — स मन्थरः प्राप्तः 42, 13. पथः प्राप्तकर्मत्वात् weil पथिन् ein erreichtes Object ist (in पन्थानं गच्छति) P. 2, 3, 12, VArt. 3, Sch. — 2) erlangt, gewonnen, sich zugezogen, auf sich geladen AK. 3, 2, 54. TRIK. 3, 3, 172. H. 1490. यत्प्राप्तं चरता वने — रमिण R. 1, 3, 5. VIÇV. 8, 17. VID. 66. 333. धातृमातृपितृप्राप्तम् (धनम्) M. 9, 194. त्वत्प्राप्तिः प्रिया प्राप्ता MBH. 1, 6175. प्राप्तं दृष्ट्वापि निधिमप्रतः Hit. Pr. 34. प्राप्त एवार्थतः सोऽर्थो यतो वाञ्छा निवर्तते I, 179. याञ्चाप्राप्तं यांचतकम् AK. 2, 9, 4. एतस्मिन्नेनांसं प्राप्ते M. 11, 122. प्राप्तवीजमिव क्षेत्रम् R. 4, 13, 39. प्राप्तजीविक P. 1, 2, 44, Sch. प्राप्तापराधं der sich eine Beleidigung hat zu Schulden kommen lassen M. 8, 299. प्राप्तदोष R. 1, 7, 13. प्राप्तपञ्चल AK. 2, 8, 3, 85. VID. 284. In solchen comp. wird P. 2, 2, 4 eine Umstellung der Glieder angenommen, weil प्राप्त activisch aufgefasst wird. Vgl. AK. 3, 6, 43. — 3) erreicht oder getroffen habend, an einem Orte angelangt seiend: तृणानि प्राप्तः AV. 9, 7, 22. अत्राप्ता कीमो भवति ÇAT. Br. 5, 3, 4, 13. ब्रह्मप्राप्तं KATHOP. 6, 18. प्राप्ताः सक्लं स्मः wir haben ein Tausend erreicht, sind ein Tausend voll geworden KHĀND. UP. 4, 5, 1. यस्यापराधात्प्राप्तोऽयमस्मान्क्लेशः DRAUP. 8, 37. DAÇ. 2, 12. रथमप्राप्तो शतव्रीम् RAGH. 12, 96. प्राप्ताऽसि नद्यविषयमिमम् VID. 246. भूमिप्राप्तं den Boden erreichend KĀTJ. Ça. 17, 4, 18. मांसप्राप्तं Suçr. 2, 64, 9. 10. रुस्तप्राप्तं oder करप्राप्तं in die Hand gelangt, was Einem ganz sicher ist, nicht entgehen kann: रुस्तप्राप्तं मन्ये स्वर्गं तव VIÇV. 9, 5. संतुष्टे करप्राप्तेऽप्यर्थे भवति नादरः Hit. 1, 139. Vgl. तस्य रुस्तगते ज्ञयः MBH. 18, 296. — 4) erlangt habend, sich zugezogen —, auf sich geladen —, erlitten — ÇAT. Br. 2, 4, 4, 6. ब्राह्म्यं प्राप्तेन संस्कारं क्षत्रियेण M. 7, 2. उत्कर्षं योषितः प्राप्ताः 9, 24. पुत्रदारात्ययं प्राप्तः 10, 99. परमापदम् 9, 313. निधनम् 5, 40. प्राप्तः स्वाञ्चैर-

कित्त्वेषम् 8, 198. 300. 342. आयुष्यव्यसनप्राप्तम् (vgl. P. 2, 1, 24) 7, 93. — MBH. 1, 5918. 10887. N. 9, 20. 13, 47. DAÇ. 2, 41. 47. — 5) gekommen, angelangt, da seiend: सभातः सान्निषः प्राप्तान् M. 8, 79. काले प्राप्तः 3, 105. 112. प्राप्ताऽस्यमरवत् MBH. 3, 2154. N. 23, 16. 26, 31. INDR. 1, 12. VID. 43. 143. 177. 300. आत्पयिके कार्ये प्राप्ते M. 7, 165. माघश्रुक्तस्य वा प्राप्ते पूर्वाह्ने प्रथमेऽहनि 4, 96. प्राप्ते काले 9, 307. MBH. 3, 2191. प्राप्ते तु षोडशे वर्षे KĀN. 11. Citat bei MALLIN. zu RAGH. 3, 28. वयसि प्राप्ते N. 1, 11. अचसरे प्राप्ते VID. 233. प्राप्तायां रजनौ 77. प्राप्तकाल m. und adj. N. 3, 15. 8, 12. 13, 17. PĀNĀT. 71, 24. HIT. I, 44. 22, 1, v. 1. प्राप्तयौवना N. 2, 7. अत्राप्यस्य BRĀHMAN. 1, 28. क्रमप्राप्त N. 12, 36. — 6) zum Abschluss, zur Reife gelangt, fertig: अत्राप्यव्यवहारद्वारा Process nicht beendet ist JĀGŪ. 2, 243. अत्राप्राता कन्या ein Mädchen, das noch nicht mannbar ist, M. 9, 88. — 7) gramm. in Folge einer Regel Geltung habend: गणपाठात्सर्वत्र प्राप्ता संज्ञा P. 1, 1, 34, Sch. प्राप्तविभाषा oder प्राप्ते वि° s. u. विभाषा. medic. indiciert: गतिमत्सु च रोगेषु भेदेन प्राप्तमुच्यते Suçr. 2, 7, 2. — Die Lexicographen kennen noch zwei Bedeutungen: 8) gestellt (प्राणिहित) AK. 3, 2, 36. — 9) schicklich H. 743. — caus. (gerund. प्राप्य oder प्राप्य P. 6, 4, 57, Sch. VOP. 26, 215) 1) Jmd oder Etwas wohin (acc. oder Ortsadv.) gelangen lassen, treiben, führen, bringen, befördern; act.: प्रापय न आचार्यकुलम् KHĀND. UP. 4, 5, 1. MBH. 1, 818. 1850. 2998. 4, 1664. ARĀ. 4, 23. R. 2, 40, 11. 4, 62, 19. PĀNĀT. 114, 23. 115, 3. KATHÁS. 10, 189. 22, 179. VID. 34. P. 1, 3, 36, Sch. प्रापयैन्म् — इतो जनपदात्परम् R. 2, 39, 10. MBH. 3, 13289. — med. ÇAT. Br. 1, 8, 1, 16. MBH. 4, 1739. 1748. पुनर्गत्वा पार्थिवं तं समेत्य वाक्यं मदीयं प्रापयस्वार्थयुक्तम् 14, 242. — pass.: तथा — श्मशानं प्रापितः सोऽभूत् KATHÁS. 23, 214. सा मञ्जूषा प्रापिता बहुभिर्जनैः 4, 76. यैः — परमं मृत्योः पदं प्रापितः PRAB. 18, 7. अमृतं सर्वमनुक्रमेण विज्ञापय प्रापितमत्प्रणामः RAGH. 14, 60. न च प्रापितमन्थेन प्रसेदर्थम् (eine Angelegenheit) M. 8, 43. — 2) Jmd (acc.) Etwas (acc.) erlangen lassen: राजानम् — प्रापयन्महतीं श्रियम् MBH. 2, 171. व्याकरणं (acc.) लेखि प्रतिष्ठा प्रापयिष्यति KATHÁS. 2, 69. कुरीणां प्रापितो राज्यं तं डुरात्मा मरुत्तमना R. 4, 34, 25. मयैष शय्यमुक्साचिच्यं प्रापितः PĀNĀT. 102, 4. प्रापितो मुख्यमन्त्रिताम् RĀGĀ-TAR. 5, 424. — 3) erlangen: त्वत्प्रसादादविघ्नेन प्रापयं क्रियाफलम् R. 1, 21, 8. — desid. zu erreichen suchen, streben: यथो वत्सो ज्ञात स्तनं प्रेषति TS. 5, 4, 3, 1. ÇAT. Br. 1, 4, 3, 13 (die Hd Schr.: प्रेषति). 4, 1, 4, 21. Vgl. प्रेषु.

— अनुप्र 1) einen Ort (acc.) erreichen, auf Jmd stossen, Jmd finden, sich zu Jmd begeben: पूर्वा दिशमनुप्राप्य VIÇV. 15, 1. मामनुप्राप्य MBH. in BENF. Chr. 70, 54. अनुप्राप्तं mit act. Bedeutung: नदीं गङ्गामनुप्राप्ताः MBH. 1, 5874. 3, 1833. 1850. R. 1, 1, 30. 2, 42, 13. 101, 10. 3, 11, 8. 23, 26. 74, 27. शरणं त्वामनुप्राप्ता 27, 9. — 2) wiedererlangen, erlangen, sich zuziehen: सीतामनुप्राप्य R. 1, 1, 80. भयं तीव्रमनुप्राप्तः MBH. in BENF. Chr. 54, 11. — 3) nachgehen, nachahmen: लीलाखिलमनुप्राप्तुर्मकेनास्तस्य विक्रमम् RAGH. 4, 22. — 4) intrans. kommen, anlangen; part. अनुप्राप्तं angekommen, angelangt: आहारार्थमनुप्राप्ता R. 3, 75, 2. 4, 39, 20. वनवासदनुप्राप्तम् (heimgekehrt) 2, 57, 27. ततः प्रावृत्तनुप्राप्ता DAÇ. 1, 13. वर्षारत्रमनुप्राप्तमतिक्रामय R. 4, 26, 24. सोऽस्यानयमनुप्राप्तं रत्नसौ प्रत्यवेदयत् 5, 33, 14.

— समनुप्र 1) einen Ort erreichen: मध्यं तु समनुप्राप्य भागीरथ्याः R.